इन्द्रवज्रा छन्द

इन्द्रवज्रा छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण-

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण क्रमशः हों, उस इन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं।

इन्द्रवज्रा छन्द का उदाहरण-

भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति।

शेषः सदैववाहितभूमिभारः षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः।।

अन्य उदाहरण-

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।

जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

विशेष-

क) इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं ।

ख) यति प्रत्येक चरण के अन्त में होता है।

ग) लक्षणानुसार इस छन्द का स्वरुप इस प्रकार से है।

ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽऽ

तगण तगण जगण दो गुरु